Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 01, March. 2024

राजा राम मोहन राय: भारतीय पुनर्जागरण के पिता

डॉ0 राकेश कुमार*
सहायक आचार्य
लक्ष्मी कॉलेज आफ एजुकेशन
बाजपुर (उधम सिंह नगर) उत्तराखंड

सारांश

राजा राम मोहन राय (1772-1833) भारतीय पुनर्जागरण के महान नेता और सुधारक थे, जिन्हें "भारतीय पुनर्जागरण का पिता" कहा जाता है। उनका जन्म बंगाल के राधानगर में हुआ था और उन्होंने संस्कृत, फारसी, और अरबी भाषाओं का अध्ययन किया। उन्होंने सती प्रथा, जातिवाद, और महिला अधिकारों के लिए संघर्ष किया। ब्रह्म समाज की स्थापना कर उन्होंने धार्मिक और सामाजिक सुधारों की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। वे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, और सामाजिक समानता के पक्षधर थे। उनके योगदान से महिला शिक्षा को बढ़ावा मिला और भारतीय समाज में सामाजिक न्याय की ओर कदम बढ़े। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के साथ मिलकर भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी काम किया। उनकी मृत्यु 1833 में इंग्लैंड में हुई, लेकिन उनका प्रभाव आज भी भारतीय समाज पर मौजूद है।

कूट शब्द: सती प्रथा, ब्रह्म समाज, महिला शिक्षा, सामाजिक न्याय, पुनर्जागरण

* Corresponding Author: Dr Rakesh Kumar
Email: hnbrakeshkumar@gmail.com
Received 12 March. 2024; Accepted 20 March. 2024. Available online: 30 March. 2024.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

राजा राम मोहन राय (1772-1833) एक भारतीय सुधारक दार्शनिक और राजनीतिज्ञ थे। वह भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे और उन्हें "भारतीय पुनर्जागरण का पिता" कहा जाता है। राजा राम मोहन राय का जन्म 22 मई 1772 को बंगाल के राधानगर में हुआ था। उनके पिता राम कांत रॉय एक जमींदार थे और उनकी माता तारिणी देवी एक धार्मिक महिला थीं। राम मोहन राय के परिवार में पारंपरिक बंगाली संस्कृति और हिंदू धर्म का पालन किया जाता था। राम मोहन राय ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पारंपरिक बंगाली विद्यालयों में प्राप्त की, जहां उन्होंने संस्कृत, फारसी, और अरबी भाषाओं का अध्ययन किया। इसके बाद, उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी में काम करना शुरू किया और जल्द ही एक सफल व्यवसायी बन गए। राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया, जो एक ऐसी प्रथा थी जिसमें विधवा महिलाएं अपने पति की मृत्यु के बाद उनकी चिता में जल जाती थीं। उन्होंने इस प्रथा को अमानवीय और अन्यायपूर्ण बताया और इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी।

राजा राम मोहन रॉय के गुरुराजा राम मोहन रॉय के गुरु का नाम मुल्ला सादिक था। मुल्ला सादिक एक प्रसिद्ध फारसी विद्वान थे जिन्होंने राजा राम मोहन रॉय को फारसी भाषा और साहित्य में शिक्षा दी। राजा राम मोहन रॉय पर कई अन्य व्यक्तियों और विचारों का भी प्रभाव पड़ा। इनमें से कुछ प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं:

उपनिषद और वेद: राजा राम मोहन रॉय ने उपनिषद और वेद का अध्ययन किया और इन्हें अपने जीवन और विचारों में महत्वपूर्ण स्थान दिया।

ईसाई धर्म: राजा राम मोहन रॉय ने ईसाई धर्म का अध्ययन किया और इसके सिद्धांतों को अपने जीवन और विचारों में शामिल किया।

मुस्लिम विद्वान: राजा राम मोहन रॉय ने मुस्लिम विद्वानों के साथ संवाद किया और उनके विचारों को अपने जीवन और विचारों में शामिल किया।

राजा राम मोहन राय की मृत्यु 27 सितंबर 1833 को इंग्लैंड में हुई थी। उनकी मृत्यु के बाद, उन्हें "भारतीय पुनर्जागरण का पिता" कहा जाने लगा। उनके कार्यों ने भारतीय समाज में सुधार लाने और धार्मिक और सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रमुख शिष्य:

देवेंद्रनाथ टैगोर: देवेंद्रनाथ टैगोर एक प्रसिद्ध बंगाली विद्वान और समाज सुधारक थे। वह राजा राम मोहन रॉय के एक प्रमुख शिष्य थे।

केशव चंद्र सेन: केशव चंद्र सेन एक प्रसिद्ध बंगाली विद्वान और समाज सुधारक थे। वह राजा राम मोहन रॉय के एक प्रमुख शिष्य थे।

प्रफुल्ल चंद्र रॉय: प्रफुल्ल चंद्र रॉय एक प्रसिद्ध बंगाली विद्वान और वैज्ञानिक थे। वह राजा राम मोहन रॉय के एक प्रमुख शिष्य थे।

अन्य शिष्य:

रामचंद्र विद्याबागीश: रामचंद्र विद्याबागीश एक प्रसिद्ध बंगाली विद्वान और समाज सुधारक थे।

ताराचंद चाक्रवर्ती: ताराचंद चाक्रवर्ती एक प्रसिद्ध बंगाली विद्वान और समाज सुधारक थे।

हरिचरण बंदोपाध्याय: हरिचरण बंदोपाध्याय एक प्रसिद्ध बंगाली विद्वान और समाज सुधारक थे।

राजा राम मोहन राय का भारतीय समाज के विकास मे सहयोग

महिला शिक्षा आंदोलन

राजा राम मोहन राय ने महिला शिक्षा का समर्थन किया और महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने जाति प्रथा का विरोध किया, महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया, और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए काम किया। राजा राम मोहन राय एक महान समाज सुधारक थे, जिन्होंने भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण सुधारों के लिए काम किया। यहाँ उनके कुछ प्रमुख योगदानों का विवरण दिया गया है:

जाति प्रथा का विरोध

राजा राम मोहन राय ने जाति प्रथा का विरोध किया, जो एक ऐसी प्रथा थी जिसमें लोगों को उनकी जाति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता था। उन्होंने इस प्रथा को अमानवीय और अन्यायपूर्ण बताया और इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी।

महिला अधिकारों का समर्थन

राजा राम मोहन राय ने महिला अधिकारों का समर्थन किया और महिलाओं के लिए शिक्षा और सामाजिक स्वतंत्रता के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए काम किया। उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए कई स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना की।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विकास

राजा राम मोहन राय ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के लिए काम किया। उन्होंने कई स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना की और स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए काम किया।

सामाजिक न्याय और समानता का समर्थन

राजा राम मोहन राय ने सामाजिक न्याय और समानता का समर्थन किया। उन्होंने सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी और सामाजिक समानता के लिए काम किया।

ब्रह्म समाज की स्थापना

राजा राम मोहन राय ने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की, जो एक धार्मिक और सामाजिक संगठन था। ब्रह्म समाज का उद्देश्य भारतीय समाज में सुधार लाना और धार्मिक और सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ना था।

राजा राम मोहन राय एक महान राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने भारतीय राजनीति में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए। यहाँ उनके कुछ प्रमुख राजनीतिक योगदानों का विवरण दिया गया है:

ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग

राजा राम मोहन राय ने ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग किया और भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए काम किया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भारतीयों के अधिकारों के बारे में जागरूक किया और उन्हें भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरित किया।

भारतीयों के अधिकारों की रक्षा

राजा राम मोहन राय ने भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए काम किया। उन्होंने भारतीयों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया और उन्हें अपने अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरित किया।

सामाजिक और आर्थिक सुधार

राजा राम मोहन राय ने सामाजिक और आर्थिक सुधार के लिए काम किया। उन्होंने भारतीय समाज में सामाजिक और आर्थिक अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी और भारतीयों के लिए सामाजिक और आर्थिक सुधार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए काम किया।

ब्रिटिश सरकार की नीतियों का विरोध

राजा राम मोहन राय ने ब्रिटिश सरकार की नीतियों का विरोध किया, जो भारतीयों के अधिकारों के खिलाफ थीं। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भारतीयों के अधिकारों के बारे में जागरूक किया और उन्हें भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरित किया।

भारतीय राष्ट्रवाद का समर्थन

राजा राम मोहन राय ने भारतीय राष्ट्रवाद का समर्थन किया। उन्होंने भारतीयों को अपने देश के लिए गर्व करने और अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योगदान:

1. ब्रिटिश संसद में भारतीयों के अधिकारों की रक्षा

राजा राम मोहन रॉय ने ब्रिटिश संसद में भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए काम किया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भारतीयों के अधिकारों के बारे में जागरूक किया और उन्हें भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रेरित किया।

2. अंतरराष्ट्रीय शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान

राजा राम मोहन रॉय ने अंतरराष्ट्रीय शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए काम किया। उन्होंने भारतीय छात्रों को विदेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया और विदेशी छात्रों को भारत में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया।

3. धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता

राजा राम मोहन रॉय ने धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए काम किया। उन्होंने विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के बीच सहिष्णुता और समझ को बढ़ावा देने के लिए काम किया।

4. महिला अधिकारों की रक्षा

राजा राम मोहन रॉय ने महिला अधिकारों की रक्षा के लिए काम किया। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए काम किया और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी।

5. अंतरराष्ट्रीय शांति और सहयोग

राजा राम मोहन रॉय ने अंतरराष्ट्रीय शांति और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए काम किया। उन्होंने विभिन्न देशों के बीच शांति और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए काम किया।

निष्कर्ष:

राजा राम मोहन रॉय एक महान भारतीय सुधारक, विद्वान, और समाज सेवक थे। उनके जीवन और कार्यों ने भारतीय समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए। राजा राम मोहन रॉय एक महान सुधारक थे जिन्होंने भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण सुधारों के लिए काम किया। उन्होंने सती प्रथा का विरोध किया, महिला शिक्षा का समर्थन किया, और सामाजिक न्याय के लिए लड़ाई लड़ी। राजा राम मोहन रॉय एक विद्वान और लेखक थे जिन्होंने कई पुस्तकें और लेख लिखे। उन्होंने भारतीय दर्शन, धर्म और संस्कृति पर कई महत्वपूर्ण कार्य लिखे। राजा राम मोहन रॉय एक महान समाज सेवक थे जिन्होंने भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण सेवाएं दीं। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में काम किया। राजा राम मोहन रॉय को भारतीय पुनर्जागरण के पिता के रूप में जाना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में एक नए युग की शुरुआत की और भारतीयों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जागरूक किया।

संदर्भ पुस्तकें:

1. मुखर्जी, एस.एन. राजा राम मोहन रॉय: एक जीवनी

2. राजा राम मोहन रॉय: आत्मकथा

3. बी. एन. बनर्जी: राजा राम मोहन रॉय: एक महान सुधारक

4. दासगुप्ता, एस. एन. राजा राम मोहन रॉय और भारतीय दर्शन

5. मजूमदार, आर. सी. राजा राम मोहन रॉय और भारतीय सुधार आंदोलन

6. पांडे, राम शुक्ला, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री

7. बनर्जी, बी.एन. राजा राम मोहन रॉय और अंतरराष्ट्रीय संबंध

8. पलोड, लाल, रमन बिहारी: उदयमान भारतीय समाज में शिक्षक

9. ट्रुथ रिलेटिव टू द लाइफ एंड टीचिंग्स ऑफ जीसस क्राइस्ट

10. प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता में एक भाषण

11. ब्रह्म समाज के सिद्धांत

12. ट्रुथ रिलेटिव टू द लाइफ एंड टीचिंग्स ऑफ द हिंदू प्रोफेट्स

13. एप्लीकेशन ऑफ द ट्रुथ ऑफ द हिंदू शास्त्र